

सत्य का असर समाचार पत्र

Jksingh hardoi gmail com मोबाइल नंबर 9956834016

Sunday / 19-01-2025

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान



पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल विश्वास ने बताया कि से धब्बे आपस में मिलकर सत्य का असर समाचार पत्र आसमान में बादल घिरे रहने बड़ा रूप ले लेते हैं। फल चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं से इसका प्रकोप तेजी से होता स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय है। इस कीट के नियंत्रण के जाती हैं यह लक्षण फसल में कानपुर के पादप रोग विज्ञान लिए एमिडाक्लोप्रिड 0.03 दिखाई देते ही डाइथेन एम विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के प्रतिशत घोल का छिड़काव 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के विश्वास ने सरसों फसल के करें या फिर जैविक नियंत्रण दो छिड़काव 15 दिन के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय किसानों के लिए एडवाइजरी के तेल को तरल साबुन में के मीडिया प्रभारी डॉक्टर जारी की है। उन्होंने बताया घोलकर (20 मिली, नीम का खलील खान ने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों तेल + एक मिलीलीटर तरल कृषकों से अपील की है कि वे का विशेष स्थान है डॉक्टर साबुन) छिड़काव करें। डॉ सरसों फसल की निगरानी विश्वास ने कहा कि इस समय विश्वास ने रोगों के बारे में अवश्य करते रहें, क्योंकि माहू कीट या चेपा का बताया कि सरसों की फसल आसमान में बादल छाप रहने प्रमुखता से सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता से सरसों की फसल में कीट में आक्रमण होता है। उन्होंने है। यह सरसों की पत्तियों पर और रोग आने की संभावना बताया कि इस कीट के शिशु छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि का पौधों के कोमल तनों, बनते हैं जो बाद में तेजी से फसल पर रोग या कीट आने पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों बढ़कर काले और बड़े आकार पर प्रबंध करें जिससे फसल से रस चूस कर उसे कमजोर के हो जाते हैं। उन्होंने बताया को कीट और रोगों से बचाया एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर कि रोग की अधिकता में बहुत जा सके।



सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाव। प्रो. एस के विश्वास, इस समय माहू कीट या चेपा का फसल पर होता है आक्रमण।



निष्पक्ष पोस्ट

कानपुर। उ.प्र। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं

क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल धिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला थब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल थब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से थब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

सूचकांक

76,619.33



हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक

व्यापारसंदेश

रविवार

कानपुर, 19 जनवरी 2025

वर्ष 68 अंक 19

आर.एन.आई. नं. 6984/58

रजि. मिस-2/CPM/03/KPHO/2013-14

मूल्य 2 रुपये पृष्ठ 8

-423.49

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

कानपुर, 18 जनवरी (निस)। सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल धिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रोड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या

फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

सत्य का असर समाचार पत्र

Jksingh hardoi gmail com मोबाइल नंबर 9956834016

Sunday / 19-01-2025

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान



पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल विश्वास ने बताया कि से धब्बे आपस में मिलकर सत्य का असर समाचार पत्र आसमान में बादल घिरे रहने बड़ा रूप ले लेते हैं। फल चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से इसका प्रकोप तेजी से होता स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर

विश्वास ने बताया कि से धब्बे आपस में मिलकर आसमान में बादल घिरे रहने बड़ा रूप ले लेते हैं। फल से इसका प्रकोप तेजी से होता स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में एमिडाक्लोप्रिड 0.03 दिखाई देते ही डाइथेन एम प्रतिशत घोल का छिड़काव 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के करें या फिर जैविक नियंत्रण दो छिड़काव 15 दिन के हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के तेल को तरल साबुन में के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाप रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।



सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

दि ग्राम टुडे, कानपुर।
(संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम



के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं

यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

सान्या मलहोत्रा ने म्यूजिक वीडियो

राव आंबेडकर की आड़ में स्वार्थी का संघान

अंक : 334

लखनऊ से प्रकाशित

लखनऊ, रविवार 19 जनवरी 2025

पृष्ठ : 08

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर, सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी



फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र

कानपुर स प्रकाशित

E-mail :- deekshalaypravah@gmail.com

दीक्षालय प्रवाह

वर्ष : 02 अंक : 212 कानपुर, 19 जनवरी, 2025 पेज-8 मूल्य : 3 रुपये > पढ़ें पेज 2 पर

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल धिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का



छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ. विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की

फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

राष्ट्रीय स्वरूप

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

कानपुर । सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों पत्तियों फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

गां

सरसों फसल को कीड़ों से बचाये किसान : प्रो. विश्वास

नीण भारत
ता जायेगा
जमीन की
यं के नाम
नी से बेच
जमीन पर

योजना के
करने का
200 ग्राम
स्व ग्राम
रौनी का
तर, ब्लाक
आयोजित
ार्यक्रम में
नशामुक्त
पंचायत
क सुरेन्द्र
न, प्रभारी
कारी दीक्षा
स राजेश
ऋतु प्रिया

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रो. डॉ. एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है।

उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉ. विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। उन्होंने बताया कि आसमान में बादल धिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण के लिये फसल में 20 मिली. नीम का तेल एक मिलीलीटर तरल साबुन घोलकर छिड़काव करें। डॉ. विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

महानगर
वर्ष-4, अंक-122, पृष्ठ: 17
मूल्य: एक रुपये

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

RNI/NO/UPHIN49792/16/4/2021



सच की अहमियत

कानपुर | रविवार, 19 जनवरी 2025

कानपुर, लखनऊ, उत्तराखंड से एक साथ प्रकाशित

सूचना प्रसारण मंत्रालय एवं भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु



किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल धिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत

घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां



सूख कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।



दैनिक उद्योग नगरी टाइम्स

E-mail : dainikudyognagritimes@gmail.com

सत्य ही कर्तव्य

वर्ष: 14

अंक: 363

कानपुर, रविवार 19 जनवरी 2025

RNI UPHIN/2010/47220

पृष्ठ: 4

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान



अनवर अशरफ कानपुर यू एन टी । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं पौधों की विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने

बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडक्लोप्रोड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर

जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें। डॉ विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूख

कर गिर जाती हैं यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाइथेन एम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कृषकों से अपील की है कि वे सरसों फसल की निगरानी अवश्य करते रहें, क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सरसों की फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंध करें जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।



अंक: 23, पृष्ठ: 12, मूल्य: 03 रु.

04 प्रदेश, 06 संस्करण

RNI No. UPHIN/2011/46455

www.amarbharti.com

रविवार, 19 जनवरी 2025, शक 2081

अमर भारती

एक उम्मीद

सरसों की फसल को बचाएं किसान: डॉ. विश्वास

कानपुर (अमर भारती ब्यूरो)। सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है डॉक्टर विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। उन्होंने बताया कि इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई पत्तियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए एमिडाक्लोप्रीड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन में घोलकर (20 मिली. नीम का तेल + एक मिलीलीटर तरल साबुन) छिड़काव करें।